3

मसीह, हमारा महायाजक

(4:14-16; 5:1-10; 7:1-28; 8:1, 2)

अधिकतर धर्मों का काम लोगों को परमेश्वर के पास या हमें परमेश्वर की ओर वापस लाना है। इस कारण कई धार्मिक समूहों में इसी प्रकार के महा याजक होते हैं जिनका काम मध्यस्थों के रूप में सेवा करना, हमारे और ईश्वर के बीच खड़े होना, अर्थात हमें परमेश्वर के पास आने में सहायता करना होता है। इब्रानियों की पुस्तक कहती है कि मसीहियत में हमारा एक महा याजक है, यीशु मसीह!

वास्तव में, मसीह का महा याजक होना ही इस पुस्तक का मुख्य विषय है। बार-बार जब हम बाइबल की कोई पुस्तक पढ़ते हैं तो हम चकित होते हैं कि यह है किस बारे में। इब्रानियों की पुस्तक में भी इस पर कोई हैरानी नहीं है। लेखक ने इब्रानियों 8:1 में हमें बताया है:

> अब जो बातें हम कह रहे हैं, उनमें से सबसे बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा महा याजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दहिने जा बैठा।

एक अर्थ में लेखक कह रहा था, ''मुख्य बात जो मैं तुम्हें बताने की कोशिश कर रहा हूं वह यह है कि हमारा ऐसा महायाजक था।'' इस आयत में हम दिलेरी के साथ कह सकते हैं कि चाहे पुस्तक का उद्देश्य लोगों को विश्वास से फिरने से रोकना है, पर इसका मुख्य विषय मसीह की महा याजकाई ही है।[1]

हम यह ध्यान देना चाहते हैं कि पुस्तक, और विशेषकर अध्याय 5 और 7 मसीह के हमारे महा याजक होने के बारे में क्या बताते हैं। हम यह भी पूछेंगे कि ''मसीह अर्थात हमारे महायाजक की प्रत्येक विशेषता का हमारे ऊपर क्या प्रभाव है?''

मसीह हमारे साथ सहानुभूति करता है

पहले तो हम यह जानते हैं कि हमारा महायाजक मसीह हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है। (पढ़ें 4:14-16.) क्यों? क्योंकि ''वह सब बातों में हमारे सम्मान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।'' उसे मालूम है कि मनुष्य होना कैसा है जिस कारण वह हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है (2:17, 18 भी देखें)।

यीशु की याजकाई की यह विशेषता हमें कैसे प्रभावित करेगी। हमारा ऐसा महायाजक, इस कारण हमें अपने विश्वास को थामे रखना चाहिए (4:14)। इसके अलावा हमें दिलेरी के साथ अनुग्रह के सिंहासन तक पहुंचना चाहिए (4:16)।

मसीह परमेश्वर द्वारा याजक ठहराया गया

दूसरा, हमें पता चलता है कि लेवियों के याजकों की तरह ही मसीह को परमेश्वर का

याजक ठहराया गया। (पढ़ें 5:1-11.)

इन वचनों में हमें मूसा की व्यवस्था के अधीन याजकों की जानकारी मिलती है। 5:1-4 के अनुसार, वे (1) मनुष्यों की ओर से सेवा करते थे, (2) बलिदान भेंट करते थे, (3) ''अज्ञानी और गुमराह लोगों'' के साथ नम्रता से पेश आते थे क्योंकि उनमें स्वयं में वे कमजोरियां थीं, (4) अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाते थे, और (5) परमेश्वर द्वारा ठहराए जाते थे। हमारे महा याजक के रूप में यीशु इन याजकों जैसा इस बात में है कि वह (1) मनुष्यों की ओर से सेवा करता है, (2) उसने अपना बलिदान दिया, (3) वह पापियों के साथ नम्रता से पेश आ सकता है क्योंकि वह हमारी तरह ही परखा गया, और (4) वह परमेश्वर द्वारा ठहराया गया। वह लेवियों के याजकों जैसा इस बात में नहीं है कि उसे अपने स्वयं के पापों के लिए बलिदान भेंट करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह निष्पाप था (4:15)।

परन्तु 5:1-11 का मुख्य ज़ोर इस बात पर है कि यीशु को परमेश्वर द्वारा याजक ठहराया गया। 5 से 7 आयतों में इब्रानियों के लेखक ने इस बात को साबित करने के लिए दो वचनों का इस्तेमाल किया (भजन संहिता 2; 110) इसके अलावा, इस वचन के अनुसार यीशु चाहे परमेश्वर का पुत्र था पर अपनी याजकाई की योग्यता उसे ''दुख उठाकर'' आज्ञा मानने के द्वारा ही होना था। मरने तक आज्ञाकार रहने ने उसके लिए हमारा महा याजक बनना सम्भव बना दिया। इस प्रकार से वह ''अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए'' (5:8, 9) उद्धारकर्त्ता बन गया।

मसीह मलिकिसिदक की रीति पर याजक है

तीसरा, हमें पता चलता है कि मसीह मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक है (5:10)। मलिकिसिदक की बात करने के बाद लेखक ने अपने पाठकों के लिए ''सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं'' की ताड़ना जोड़ दी (6:1)। फिर अध्याय 7 में वह मलिकिसिदक के अध्याय पर लौट आया जिसका परिचय अध्याय 5 में दिया गया है। (पढ़ें 7:1-25.) आइए इस निराले याजक की जांच करते हैं।

मलिकिसिदक की याजकाई की विशेषताएं

इब्रानियों 7 में हमें मलिकिसिदक की याजकाई की कुछ बातें पता चलती है। यह याजकाई जिसमें मसीह को ठहराया गया, लेवी की याजकाई से अलग कैसे थी।

स्थाई याजकाई। इब्रानियों 7 का आरम्भ उस सब को याद दिलाने से होता है जिसे हम पुराने नियम से मलिकिसिदक के बारे में जानते हैं (देखें उत्पत्ति 14:17-20)। लेखक ने एक बात पर ध्यान दिलाया कि मलिकिसिदक बाइबल में अचानक आता है और उसकी वंशावली या उसके जन्म या उसकी मृत्यु के विषय में कुछ नहीं कहा गया, इस कारण वह ''सदा के लिए याजक बना रहता है'' (7:3)। इसी प्रकार से लेवियों की याजकाई के विपरीत यीशु ''का याजक पद अटल है'' (7:23, 24)।

एक बेहतर याजकाई। लेखक ने यह साबित करने केलिए कि मसीह की याजकाई मूसा की व्यवस्था के अधीन लेवियों की याजकाई से बेहतर है, मलिकिसिदक का इस्तेमाल किया। उसने ध्यान दिलाया कि अब्राहम ने मलिकिसिदक को दशमांस दिया (7:4)। इस्राएली लोग लेवीय

याजकों को दशमांश देते थे, जो अब्राहम की सन्तान थे। यह तथ्य कि लेवीय याजक जो दशमांश लेते थे उन्होंने (अपने पिता अब्राहम के द्वारा) मलिकिसिदक को दशमांस दिया जो इस बात को साबित करता है कि मलिकिसिदक उनसे बड़ा था (7:4-10)। इस रूपक से हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि मसीह की याजकाई लेवी की याजकाई से बड़ी है।

एक अलग याजकाई। 7:11 में लेखक ने दिखाया कि मलिकिसिदक की रीति पर एक और याजक के आने की दाऊद की भविष्यवाणी व्यवस्था के निर्बल होने का संकेत था। यदि व्यवस्था टुटी अधीन होती तो मलिकिसिदक की रीति पर एक और याजक की आवश्यकता न पड़ती।

इस कारण मसीह की याजकाई लेवीय याजकाई से अलग है। मसीह का जन्म एक अलग गोत्र में हुआ (7:13, 14); वह याजक बना ''शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार नहीं, पर अविनाशी जीवन की सामर्थ के अनुसार'' याजक बना (7:16)। लेवीय याजकों के विपरीत वह उसे शपथ दिलाकर याजक बनाया गया (7:20, 21)।

एकल याजकाई। इसके अलावा यीशु की याजकाई एकल है। पुरानी वाचा के अधीन याजक ''बहुत बड़ी संख्या में बनते आए, इसका कारण यह था कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती थी'' (7:23), परन्तु नई वाचा के अधीन यीशु एकमात्र महायाजक है।

मसीह की बेहतर याजकाई के परिणाम

इस तथ्य के क्या परिणाम हैं कि मसीह लेवी की रीति के बगैर मलिकिसिदक की रीति पर महा याजक है ? इब्रानियों 7 अध्याय मसीह की बेहतर याजकाई के दो विशेष परिणाम बताता है।

एक बेहतर वाचा। इब्रानियों 7 में लेखक ने कई बार इस बात की पुष्टि की कि मसीह हमारा महा याजक है और उसकी याजकाई लेवीय याजकों की याजकाई से अलग है, इस कारण मूसा की व्यवस्था रद् हो चुकी थी। (1) याजकाई में परिवर्तन आया है इस कारण व्यवस्था में भी परिवर्तन आना आवश्यक है (7:12)। (2) ''पहली आज्ञा'' को ''निर्बल और निष्फल होने के कारण इसलिए कि व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं की'' (7:18, 19) एक ओर कर दिया गया है। (3) यीशु ''एक उत्तम वाचा का जामिन ठहरा'' (7:22)। आइए हम उस उत्तम वाचा के लिए परमेश्वर को धन्यवाद करें जो मसीह की याजकाई से हमें मिलती है!

उद्धार की उपलब्धता। मसीह की याजकाई के स्थाई होने की बात करते हुए, इब्रानियों 7:25 कहता है, ''इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।'' आइए हम परमेश्वर को महिमा दें कि हम मसीह के पास हर समय आ सकते हैं क्योंकि वह हमारा महायाजक है जो हमारे लिए उद्धार दिलाने को सर्वदा जीवित है!

मसीह ने हमारे पापों के लिए सिद्ध बलिदान चढ़ाया

इसके अलावा हमें पता चलता है कि हमारे महा याजक मसीह ने हमारे पापों के लिए सिद्ध बलिदान चढ़ाया है। (पढ़ें 7:26-28.) इस वचन में हमें शायद पुरानी और नई वाचाओं के सबसे महत्वपूर्ण अन्तर मिलते हैं: (1) पुरानी वाचा के याजक जहां कमजोर और पापी थे (5:2; 7:28), वहीं मसीह ''पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से

भी ऊंचा किया गया'' है (7:26)। ''जो युगानुयुग के लिए सिद्ध किया गया है'' (7:28)। (2) लेविये याजकों को जहां अपने लिए बलिदान चढ़ाने पड़ते थे (5:3), अपने निष्पाप होने के कारण मसीह को ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी। (3) पुरानी वाचा के अधीन बलिदान प्रतिदिन चढ़ाए जाते थे पर मसीह ने एक ही बलिदान अर्थात ''सदा के लिए एक ही बार'' बलिदान चढ़ा दिया। (4) लेवीय याजकों को जहां पशुओं के बलिदान चढ़ाने पड़ते थे, वहीं मसीह ने अपना स्वयं का बलिदान चढ़ा दिया (देखें 9:11-14; 9:28)। मसीह की याजकाई के इन तथ्यों का हमारे लिए क्या महत्व है? इनसे पता चलता है कि पापों की क्षमा जो पुरानी व्यवस्था के द्वारा उलब्ध नहीं हुई हमारे लिए मसीह के बलिदान के द्वारा उपलब्ध है!

हमें अपने पापों में बने रहने की आवश्यकता हनीं है क्योंकि हमारे महा याजक को हमारे पापों को ले जाने के लिए एक ही बार सदा के लिए बलिदान दे दिया है।

मसीह आज भी हमारे महायाजक के रुप में काम करता है

पांचवा, हमें पता चलता है कि मसीह हमारे महायाज के रूप में सेवा कर रहा हौ (पढ़ें 8:1, 2.) इन आयतों में ज़ोर इस बात पर है कि मसीह हमारे महायाजक के रूप में सेवा करता जा रहा है। [अब] हमारा एक महायाजक है, जिसने अपना सिंहासन [परमेश्वर के दाहिने ओर लगाया है] और इस समय हमारी ओर से वे मसीह में सेवा कर रहा है। *तात्पर्य यह है कि इस समय उसके द्वारा हमारी परमेश्वर तक पहुंच है;* क्योंकि 7:25 कहता है कि वह हमारे ''लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है।''

सारांश

समाप्ति करते हुए याद रखें कि *हमें स्वर्ग में जाने के लिए सहायता की आवश्यकता है*! हम इतने निर्बल, इतने पापी हैं कि हम एक काम अपने आप नहीं कर सकते। अच्छी खबर यह है कि हमारे पास वह सहायता है, जिसकी हमें आवश्यकता है और वह सहायता हमारे बड़े महायाजक यीशु मसीह के द्वारा मिलती है! वह हमारा मध्यस्थ, और हमारा विनती करने वाला है जो हमारे लिए ''विनती करने को सर्बदा जीवित'' है। इसलिए आइए दिलेरी के साथ उसकी सहायता के लिए जुड़ें और मान लें कि हम हियाव के साथ परमेश्वर के पास उस कारण जो उसने हमारे लिए किया आ सकते हैं।

क्या मसीह आपका महायाजक है? यदि आपने अपने आपको नई वाचा में रखते हुए, स्वेच्छा से अपने आपको उससे नहीं जोड़ा है, तो वह आपका महायाजक नहीं है और न वह आपको स्वर्ग में ले जाने के लिए आपकी आवश्यकता में सहायता दे सकता है। उसके आपका महा याजक बनने को आपको उसी इच्छा को मानकर उसकी आज्ञा माननी होगी (इब्रानियों 5:8, 9)। विश्वास करने (यूहन्ना 8:24), मन फिराने (लूका 13:3), अपने विश्वास का अंगीकार करने (मत्ती 10:32) और बपतिस्मा लेने (मरकुस 16:16; मत्ती 28:19, 20) के लिए उसकी आज्ञाओं को मानें। जब आप ऐसा करते हैं तो आपको मसीह के सिद्ध बलिदान के द्वारा उद्धार दिलाया जाएगा, मसीह आपका महायाजक बन जाएगा और वह स्वर्ग में ले जाने के लिए आपकी सहायता करेगा।

टिप्पणी

[1]इब्रानियों 8:1 में कही गई बातें विशेष रूप में अध्याय 5 से 7 के पिछले वचनों के सम्बन्ध में है। परन्तु मसीह की याजकाई पर दिया जाने वाला जोर पूरी पुस्तक में मिलता है। उदाहरण के लिए देखें इब्रानियों 1:3 (इम्पलाइड); 2:17; 3:1; 4:14, 15; 8:1–4; 9:11; 10:11, 12.